



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Tribune	22-8-22	4	7-8

Best Research Centre Award for agri varsity

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, AUGUST 21

The fodder section of the Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU) has been awarded the Best Research Centre Award for the year 2021-23 at the national level for its excellent research on jowar crop.

Vice-Chancellor Prof BR Kamboj said Dr Trilochan Mohapatra, Director General, Indian Council of Agricultural Research, New Delhi, had presented the award at the 52nd Annual Group Meeting of the All India Coordinated Research Project (Jowar) organised by the Indian Institute of Millets Research, Hyderabad.

He said the fodder section of the university had done commendable work in the develop-

'Commendable' work
done on development
of jowar varieties

ment of improved varieties of jowar, management of nutrients like phosphorus and potash in the crop and seed production of fodder jowar. So far, 13 improved varieties of jowar have been produced, out of which CSV-53F, HJH-1513 and HJ-1514 were recently developed with high protein content and digestible properties.

"CSV 53F variety will be cultivated in the states of Gujarat, Rajasthan, Punjab, Haryana, Uttarakhand, Maharashtra, Karnataka and Tamil Nadu while the HJH-1513 and HJ-1514 varieties have been identified for cultivation in Haryana", said Prof Kamboj.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	21-8-22	9	3-8

वीसी बोले, ज्वार की नई किस्मों का किसानों और पशुपालकों को होगा लाभ

हकृषि का चारा अनुभाग राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ



हिसार। चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 52वीं वार्षिक समूह बैठक में परिषद के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने यह अवार्ड प्रदान किया।

एचजेएच 1513 व 1514 हरियाणा के लिए चिह्नित
कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514

ज्वार की नई किस्मों की यह है विशेषताएं

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया ज्वार की सीएसवी 53 एक एक कटाई वाली किस्म है जिसको गुजरात, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, कर्नाटक व तमिलनाडु राज्यों के लिए चिह्नित किया गया है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

किस्म हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए चिह्नित की गई हैं। इनमें से एचजेएच 1513 एक कटाई वाली हाइब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 717 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह

मीठी व जूसी किस्म है जिसमें 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता है।

इसी प्रकार एचजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार 664 व सूखे चारे

13 किस्मों विकसित

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उच्चतम किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटेश जैसे पोषक तत्वों के प्रभाव के साथ चारे वाली ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सफलता प्राप्त की। अब तक ज्वार की 13 उच्चतम किस्मों विकसित की हैं।

की पैदावार 161 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है।

राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया

हरिभूमि न्यूज़ >>> हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय कदन अनुसंधान संस्थान,



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	21.8.22	4	15

उपलब्धि • कुलपति बोले- ज्वार की नई किस्मों का किसानों और पशुपालकों को होगा लाभ हरियाणा कृषि विवि के चारा अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड

भास्कर न्यूज़ | हिसार



एचएयू में चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

एचएयू के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय कदम अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 52वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने यह अवार्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बताया, विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटेश

जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन के साथ चारे वाली ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सहायनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएस्वी-53

एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई हैं। उन्होंने उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी।

ज्वार की दो किस्में राज्य में बिजाई के लिए चिह्नित

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए चिह्नित की गई हैं। इनमें से एचजेएच 1513 एक कटाई वाली हाइब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 7.17 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह मोटी व जूनी किस्म है जिसमें 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फलाई व स्टेम बोरेर कीड़ों के प्रति सहनशील

है। इस किस्म को विकसित करने का श्रेय डॉ. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, एस. आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, एन. खरोड़, बी.एल. शर्मा, डी.पी. सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी को जाता है। इसी प्रकार एचजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार 6.64 व सूखे चारे की पैदावार 1.61 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फलाई व स्टेम बोरेर कीड़ों के प्रति सहनशील है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब कसरी	21-8-22	1	6-8



चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

हकृवि के चारा अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

हिसार, 20 अगस्त (ज्यूर): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय कदम अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 52वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने यह अवार्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटेश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन के साथ चारे वाली ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सरहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई हैं जिनके लिए चारा अनुभाग को यह अवार्ड प्रदान किया गया है। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों में डॉ. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट,

एस. आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, एन. खरोड, बी.एल. शर्मा, डी.पी. सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

दैनिक जगरण

21.8.22

2

1-4

हरियाणा कृषि विवि के चारा अनुभाग को मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवार्ड

कुलपति बोले- ज्वार की **नई किस्मों** से किसानों और पशुपालकों को होगा लाभ

जगरण संवाददाता, हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 52वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के महानिदेशक डा. त्रिलोचन महापात्रा ने यह अवार्ड प्रदान किया। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों



चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज। • छीआरओ

में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फ़ास्फोरस व पोटेश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन के साथ चारे वाली ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की

13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई हैं जिनके लिए चारा अनुभाग को यह अवार्ड प्रदान किया गया है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए वैज्ञानिकों को बधाई दी।

इनमें प्रोटीन की मात्रा और पाचनशीलता अधिक

अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने कहा कि इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 किग्रा प्रति हेक्टेयर है। यह शूट फ़ाई, स्टेम बोरर जैसे कीड़ों के प्रति रोधी है व ग्रे लीफ़ स्पॉट व शूटी स्ट्रिप बीमारी के प्रति प्रतिरोधी है। चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों की ओर से विकसित किया गया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

अमर उजाला

दिनांक

21 '8' 22

पृष्ठ संख्या

4

कॉलम

6-8

उपलब्धि

एचएयू के चारा अनुभाग को उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए सम्मान

चारा अनुभाग को सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र अवॉर्ड

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र अवॉर्ड प्रदान किया गया है।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान हैदराबाद की ओर से आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 52वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद् के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने यह अवॉर्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटैश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन के साथ चारे वाली ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं, जिनके दृष्टिगत ये अवॉर्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में



हिसार। चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज। संवाद

विकसित की गई हैं, जिनके लिए चारा अनुभाग को यह अवॉर्ड प्रदान किया गया है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी।

ज्वार की नई किस्मों की यह है विशेषताएं : विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया कि ज्वार की सीएसवी 53 एफ एक कटाई वाली किस्म है, जिसको गुजरात, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, कर्नाटक व तमिलनाडु राज्यों के लिए चिह्नित किया

गया है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

इन वैज्ञानिकों में डॉ. पम्मी कुमारी, एसके पाहुजा, डीएस फोगाट, सतपाल, एन खरोड़, बीएल शर्मा एवं मनजीत सिंह की टीम ने विकसित किया है। ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए चिह्नित की गई हैं।

यह हाईब्रिड किस्म औसतन 717 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की पैदावार देती है। इस किस्म को विकसित करने का श्रेय डॉ. पी कुमारी, डीएस फोगाट, एस आर, एसके पाहुजा, सतपाल, एन खरोड़, बीएल शर्मा, डीपी सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी को जाता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
डिजील समन्वय	21.8.22	5	1-5

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

ज्वार की नई किस्मों का किसानों और पशुपालकों को होगा लाभ : कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार, 20 अगस्त (विरेन्द्र वर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय कदम अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 52वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद् के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने यह अवार्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फायफोरस व पोटाशा जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन के साथ चारे वाली ज्वार के



चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई है, जिनके लिए चारा अनुभाग को यह अवार्ड प्रदान किया गया है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए

बहुत फायदेमंद साबित होंगी।

ज्वार की नई किस्मों की यह हैं विशेषताएं : विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया ज्वार की सीएसवी 53 एफ एक कटाई वाली किस्म है, जिसको गुजरात, राजस्थान,

पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, कर्नाटक व तमिलनाडु राज्यों के लिए चिन्हित किया गया है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 किंटल प्रति हेक्टेयर है। यह शूट फलाई, स्टेम बीयर जैसे कीड़ों के प्रति रोधी है व ग्रे लीफ स्पॉट व शूटी ट्रिप बीमारी के प्रति प्रतिरोधी है। चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित किया गया है। इन वैज्ञानिकों में डॉ. फर्मी कुमारी, एस.के. पाहुजा, डॉ.एस. फोगाट, सतपाल, एन. खरोड़, बी.एल. शर्मा एवं मनजीत सिंह की टीम ने विकसित किया है।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजवाई के लिए चिन्हित की गई हैं। इनमें से एचजेएच 1513 एक कटाई वाली हाइब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 717 किंटल प्रति हेक्टेयर है। यह मीठी व जूची किस्म है जिसमें 8.6

प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फलाई व स्टेम बीयर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने का श्रेय डॉ. पी. कुमारी, डॉ.एस. फोगाट, एस. आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, एन. खरोड़, बी.एल. शर्मा, डॉ.पी. सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी को जाता है।

इसी प्रकार एचजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 किंटल प्रति हेक्टेयर है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फलाई व स्टेम बीयर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों में डॉ. पी. कुमारी, डॉ.एस. फोगाट, एस. आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, एन. खरोड़, बी.एल. शर्मा, डॉ.पी. सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	20.8.2022	--	--

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

समस्त हरियाणा न्यून
हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सर्वोच्च अनुसंधान परिवोचना (ज्वार) की 52वीं वार्षिक समूह बैठक में उत्कृष्ट परिषद के महानिदेशक डॉ. विलोचन महापात्र ने यह अवार्ड प्रदान किया। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चार अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार को उत्तम किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटेश के पोषक तत्वों के प्रबंधन के साथ चार खेती ज्वार के प्रौद्योगिकी के अनुसंधान कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिए गए हैं। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उत्तम किस्मों विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एक किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में

विकसित की गई हैं जिनके लिए चार अनुभाग को यह अवार्ड प्रदान किया गया है। उन्होंने इस अवसर के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी। ज्वार की नई किस्मों को यह है विशेषकर विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों को विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया ज्वार की सीएसवी 53 एक एक कटाई वाली किस्म है जिसको गुजरात, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, कर्नाटक व तमिलनाडु राज्यों के लिए पंचित किया गया है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह सूट फलाई, स्टैम बीरर बीजे कोटों के प्रति रोधी है व डी स्वीफ स्पीड व शुटी स्ट्रुप बीमारों के प्रति प्रतिरोधी है। चार अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित किया गया है। इन वैज्ञानिकों में डॉ. पद्मी कुमारी, एस.के. पाहुजा, डॉ.एस. फोगाट, सतपाल, एन. खरोड़, बी.एल. शर्मा एवं मनजीत सिंह को टीम



ने विकसित किया है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में विज्ञान के लिए चिन्हित की गई हैं। इनमें से एचजेएच 1513 एक कटाई वाली हाइब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 717 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म को विकसित करने का श्रेय डॉ. पी. कुमारी, डॉ.एस. फोगाट, एस. आर्ष, एस.के. पाहुजा, सतपाल, एन. खरोड़, बी.एल. शर्मा, डॉ.पी. सिंह, मनजीत सिंह व सतिश देवी को जाता

है। इसी प्रकार एचजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसको हरे चारे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है। यह पत्ते रोधी के प्रति प्रतिरोधी व सूट फलाई व स्टैम बीरर बीजे के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों में डॉ. पी. कुमारी, डॉ.एस. फोगाट, एस. आर्ष, एस.के. पाहुजा, सतपाल, एन. खरोड़, बी.एल. शर्मा, डॉ.पी. सिंह, मनजीत सिंह व सतिश देवी शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	20.8.2022	--	--

हकृषि के चारा अनुभाग को मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

**कुलपति प्रो. काम्बोज बोले,
ज्वार की नई किस्मों का
किसानों और पशुपालकों को
होगा लाभ**

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय कदम अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 52वाँ वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने यह अवार्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटैश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन के साथ चारे वाली ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13



उन्नत किस्मों विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई हैं जिनके लिए चारा अनुभाग को यह अवार्ड प्रदान किया गया है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को सभ्यंदी दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिज्जाई के लिए चिन्हित की गई हैं। इनमें से एचजेएच 1513 एक कटाई वाली हाइब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 717 किंटल प्रति हेक्टेयर है। यह मीठी व जूसी किस्म है जिसमें 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता है। यह पत्ती रोगों के प्रति

ज्वार की नई किस्मों की ये हैं विशेषताएं

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया ज्वार की सीएसवी 53 एक एक कटाई वाली किस्म है जिसको गुजरात, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, कर्नाटक व तमिलनाडु राज्यों के लिए चिन्हित किया गया है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 किंटल प्रति हेक्टेयर है। यह शूट फ्लाई, स्टेम बोरर जैसे कीड़ों के प्रति रोधी है व ये लोफ स्पॉट व शूटी स्ट्रिप बीमारी के प्रति प्रतिरोधी है। चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित किया गया है। इन वैज्ञानिकों में डॉ. पम्मी कुमारी, एस.के. पाहुजा, डी.एस. फोगाट, सतपाल, एन. खरोड, बी.एल. शर्मा एवं मनजीत सिंह की टीम ने विकसित किया है।

प्रतिरोधी व शूट फ्लाई व स्टेम बोरर प्रकार एचजे 1514 एक कटाई वाली कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 को विकसित करने का श्रेय डॉ. पी. 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 कुमारी, डी.एस. फोगाट, एस. आर्य, किंटल प्रति हेक्टेयर है। यह अधिक एस.के. पाहुजा, सतपाल, एन. खरोड, प्रोटीन वाली किस्म है। यह पत्ती रोगों बी.एल. शर्मा, डी.पी. सिंह, मनजीत के प्रति प्रतिरोधी व शूट फ्लाई व स्टेम बोरर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इसी



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार	22.8.2022	--	--

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति

की 52वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद् के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने यह अवार्ड प्रदान किया। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के

ज्वार की नई किस्मों का किसानों और पशुपालकों को होगा लाभ: कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई हैं जिनके लिए चारा अनुभाग को यह अवार्ड प्रदान किया गया है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी। ज्वार की नई किस्मों की यह हैं विशेषताएं: विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं।



प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार)

विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन के साथ चारे वाली ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिन्यु स्थान समाचार	20.8.2022	--	--

| हिसार: एचएयू के चारा अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

📅 20 Aug 2022 1803:41



उच्चार की लड़ू किस्में का किसानों और पशुपालकों को होना चाहिए - कुलपति सम्बोधन

हिसार, 20 अगस्त (दि.स.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को उच्चार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बीआर सम्बोधन ने बतियावर को बतयाया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, लखे दिल्ली के अंतर्गत भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सम्मेलित अनुसंधान परिषदीयता (उच्चार) की 52वीं वार्षिक सम्मेलन बैठक में उपरोक्त परिषद के अध्यक्षितदेशक डॉ. किलोचल मद्रायाका से यह अवार्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बतयाया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग से हाल ही के वर्षों में उच्चार की उत्कृष्ट किस्में के विकास, उच्चार में कामकीरस व पोटाका जैसे पोषक तत्वों के प्रबोधन के साथ चारे वाली उच्चार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके बहिनल से अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग से अद्य तक उच्चार की 13 उत्कृष्ट किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएनवी-53 एक किस्म, सधनेसध-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की लड़ू हैं जिनके लिए चारा अनुभाग को यह अवार्ड प्रदान किया गया है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होगी।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. नीतराज शर्मा ने उच्चार की लड़ू किस्में की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बतयाया कि इन तीनों किस्में में पोटील की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बतयाया उच्चार की सीएनवी-53 एक एक कटाई वाली किस्म है जिसको गुजरात, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, कर्नाटक व तमिलनाडू राज्यों के लिए विकसित किया गया है।

कृषि अनुसंधान के अधिकाता डॉ. एसके पाटुजा ने बतयाया कि उच्चार की सधनेसध-1513 व एचजे-1514 किस्में हरियाणा राज्य में किसानों के लिए विकसित की लड़ू हैं। इनमें से सधनेसध-1513 एक कटाई वाली हाइब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 717 किग्रेड प्रति हेक्टेयर है। यह सीपी व जूली किस्म है, जिसमें 8.6 प्रतिशत पोटील व 53 प्रतिशत पाचनशीलता है। यह वाली रोशों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फसल व स्ट्रेम गोरर कीलों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने का श्रेय डॉ. पी. कुमारी, डीएस कोगाट, एस. आर्य, एसके पाटुजा, सतपाल, एस. बरोड, बीएस शर्मा, डीपी सिंह, मलनीर सिंह व सविता देवी को जाता है।



21 Aug 2022
हरियाणा समाचार
हिसार के पाठक आ
डॉ.बी.बी. सम्बोधन



21 Aug 2022
कृषि अनुभाग के लड़ू
- सीएनवी-53 व एचजे-1514



21 Aug 2022
कृषि अनुभाग के लड़ू
- सीएनवी-53 व एचजे-1514



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	20.8.2022	--	--

हकृवि के चारा अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 52वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद् के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने यह अवार्ड प्रदान किया।



सिटीपल्स न्यूज, हिसार। चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटेश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन के साथ चारे वाली ज्वार के जीन उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई हैं जिनके लिए चारा अनुभाग को यह अवार्ड प्रदान किया गया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

जम. 212

दिनांक

20.8.2022

पृष्ठ संख्या

--

कॉलम

--

ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के हकूवि को मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड

हिसार/ 20 अगस्त/ रिपोर्ट

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2021-22 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के महानिदेशक डॉ.



त्रिलोचन महापात्रा ने यह अवार्ड प्रदान किया। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फॉस्फोरस व पोटैश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन के साथ चारे वाली ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत

सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसबी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई हैं जिनके लिए चारा अनुभाग को यह

अवार्ड प्रदान किया गया है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होगी। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजार्ड के लिए चिह्नित की गई हैं। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों टीम में डॉ. पी कुमारी, डीएस फोगाट, एस आर्य, एसके पाहुजा, सतपाल, एन खरोड़, बीएल शर्मा, डीपी सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी शामिल हैं।